The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 2 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

गुरु जंभेश्वर जी के दर्शन का समकालीन विश्व के संदर्भ में अध्ययन

सर्वेश चतुर्वेदी
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, हिंदू कॉलेज मुरादाबाद

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19099628

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 19-02-2026

Published: 10-03-2026

Keywords:

गुरु जम्भेश्वर, समकालीन विश्व, पर्यावरण

ABSTRACT

15 वीं 16 वीं शताब्दी का संधिकाल भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है उस समय अनेक संत अवतरित हुए जिनके दिव्य ज्ञानोपदेश से नई चेतना भारतीय जनमानस में आई।अतः इस काल को संत युग भी कहा जा सकता है ,इसी संत परंपरा में श्री गुरु जम्भेश्वर जी महाराज का स्वरूप तेजोमय ज्योति स्वरूप था।आज से पांच शताब्दी पूर्व गुरु जम्बेश्वर जी ने जनकल्याण के लिए मानवता का परिष्कृत संविधान मानव मात्र के सामने रखा जो कि युक्ति-मुक्ति का खजाना है। मानव मात्र को ज्ञानोपदेश दिया यह उपदेश शब्दवाणी के नाम सेप्रसिद्ध हैं।जनसाधारण को सन्मार्ग में लाने के लिए ही शबद वाणी का सृजन हुआ।वर्तमान भौतिक युग में विश्व शांति का एकमात्र उपाय है श्री जम्भेश्वर गुरु जी द्वारा उच्चारित शब्दवाणी ही हो सकती है। शब्दवाणी एवं 29 नियम सभी वेद शास्त्रों का सार होते हुए समसमायिक है।उत्तम कर्म ,जैसा कर्म वैसा फल,कथनी व करनी में समानता, स्वच्छता पर बल, संसार की क्षणभंगुरता,समानता पर बल ,जीवों पर दया व वृक्षों की रक्षा ,परोपकार की भावना ,दुविधा का त्याग, पाखंड व आडंबर से दूरी ,मूल को बढ़ाना, कलावंतों से सावधानी ,संसार गोवलवास ,भागवत नाम का जप एवं गीता की प्रशंसा आदि की शिक्षा मानव समाज को दी। पर्यावरण संरक्षण के जो उपाय गुरु जंभेश्वर जी ने बताए हैं वे पूर्व वैज्ञानिक है ।इन उपायों द्वारा आज भी पर्यावरण की समस्या को हल किया जा सकता है ,इसी आधार पर गुरु जम्भेश्वर जी को पर्यावरण संरक्षण का प्रणेता माना जाता है। वर्तमान युवाओं के लिए समानता ,दुविधा का त्याग ,आडंबर ,स्वच्छता ,पर्यावरण संरक्षण , कर्म, नशा मुक्ति, अहिंसा व विलासता से दूरी आदि की शिक्षा मार्गदर्शन कर सकती है जिससे वह अपना योगदान मानव व विश्व कल्याण में कर सकते हैं। प्रस्तुत लेख में गुरु जम्भेश्वर जी के विचारों को समकालीन विश्व में पर्यावरण संरक्षण व युवाओं को मार्गदर्शन के संबंध में प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना -

भारतीय संत परंपरा में गुरु जम्भेश्वर जी का स्थान अत्यंत विशिष्ट है।उन्होंने जिंस युग में जन्म लिया,वह सामाजिक ,धार्मिक और नैतिक दृष्टि से संक्रमण का काल था 15 वीं शताब्दी का भारत जातिगत भेदभाव ,धार्मिक आडंबर, अंधविश्वास ,सामाजिक असमानता और पर्यावरण के प्रति उपेक्षा से ग्रस्त था ऐसे समय में गुरु जम्भेश्वर जी ने एक ऐसे जीवन दर्शन की स्थापना की जिसमें मानव,प्रकृति और परमात्मा के बीच संतुलन को सर्वोच्च मूल्य माना गया।गुरू जंभेश्वर जी ने मानव सभ्यता को उर्ध्वगामी बनाने हेतु जो विदेश दिए वे समाज हितकारी थे।

गुरु जम्भेश्वर जी के समय भारतीय समाज जाति व्यवस्था, छुआछूत और सामाजिक असमानता से ग्रस्त था। धार्मिक कर्मकांडों और पाखंडों ने मानवता को निम्न बना दिया था।

धर्म भय, कर्मकांड और आडंबर का माध्यम बन चुका था। आम जनता को अंधविश्वासों में उलझाकर रखा गया था।इसी पृष्ठभूमि में भक्ति आंदोलन ने जन्म लिया। जिसमें कबीर,रैदास, मीरा ,नानक और श्री गुरु जम्भेश्वर जी जैसे संतों ने सरल ,नैतिक और मानवतावादी धर्म का उपदेश दिया।

राजस्थान जैसे सूखे क्षेत्र में जल ,वन और वन्य जीव जीवन के आधार थे। किंतु मानव द्वारा प्रकृति का अंधाधुंध दोहन हो रहा था। गुरु जम्भेश्वर जी ने इस संकट को बहुत पहले पहचान लिया था।

अध्ययन का उद्देश्य -

गुरु जम्भेश्वर जी ने अहिंसा और करुणा, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समानता और नैतिक आचरण को अपनी शब्दवाणी द्वारा तत्कालीन समाज को उपदेश दिया।प्रकृति,पर्यावरण और पशु संरक्षण पर जितना महत्त्व मध्यकालीन सन्तो में गुरु जम्भेश्वर जी ने दिया उतना शायद अन्य संत नहीं दे पाए।गुरु जम्भेश्वर जी ने अपने शबदबाणी में मनुष्य को इस बात के लिए सदैव प्रेरित किया कि वह जीवन को सादगी एवं प्रकृति प्रिय बनाए रखें ।संत जम्भोजी ने अनुभव किया कि लोगों को पर्यावरण के महत्त्व को समझना ही होगा।

अनुकूलन का संकल्प व प्रतिकूल का त्याग शब्दवाणी की मूल संवेदना प्रेम, दया,ममता ,स्नेह, बंधुत्व भावना, संतोष आदि वृतियों को मनुष्य का आभूषण माना है। इन वृतियों को धारण करने से व्यक्तित्व के साथ साथ सामाजिकता भी सुदृढ़ होती है। 'सदा संतोषी सत उपकरण, महे ताजिया मान अभिमान' अथार्त मनुष्य को अभिमान त्याग कर संतोषवित्ती धारण करना चाहिए। व्यर्थ वाद विवाद में ना उलझकर व्यक्ति को नैतिक जीवन व्यतीत करना चाहिए।

गुरु जम्भोजी ने कर्मयुक्त जीवन पर ज़ोर दियाहै है। यह धरती कर्मभूमि है ।यहाँ प्रत्येक मनुष्य को कर्म करते रहना चाहिए ।कर्म रहित जीवन किसी काम का नहींहै। जो कर्म लोकमंगलकारी एवं मोक्ष प्राप्ति में सहायक होते हैं। वे ही उत्तम कर्म है। उत्तम कर्मों के लिए लिए मनुष्य को अच्छी संगति करनी चाहिए। भौतिक जीवन में मनुष्य को अपनी समझ एवं शक्ति के अनुसार उत्तम कर्म करने चाहिए।

परोपकार एवं दान से ही मनुष्य को भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख प्राप्त हो सकता है। गुरु जम्भेश्वर जीके अनुसार दुविधावृत्ति के त्याग एवं एकाग्र मन से किसी भी काम में सफलता प्राप्त की जा सकती है। दुविधा वृत्ति से न तो बात कही जा सकती है ।और न ही किसी की बात सुनी जा सकती है।हक की कमाई खाने के लिए यह भी आवश्यक है कि मनुष्य सादगी से रहे और जो कुछ रूखा सूखा मिल जाए उससे संतोष धारण करें। उसे सदैव मोटा ओढ़ना और पहनना चाहिए और सादे भोजन से संतुष्ट रहना चाहिए।

ब्रह्म को जाने बिना सब कुछ करना केवल दिखावा है।मूर्ति पूजा का विरोध किया।गुरु जम्भेश्वर जी ने राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिंदू मुस्लिम एकता पर भी बल दियाहै।गुरु जम्भेश्वर जी ने भौतिक जीवन की सफलता तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए मूल को सींचने पर बल दिया है ।सही समय और उचित साधनों के प्रयोग से ही मनुष्य भौतिक जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है ।इसी कारण गुरु जंभेश्वर जी ने बिना सोचे समझे काम करने का बार बार विरोध किया है ।धर्म के मूल रूप को जाने बिना कुछ भी करना मूर्खतापूर्ण है।मोक्ष प्राप्ति हेतु गुरु जम्भेश्वर जी ने बार बार विष्णु के नाम को जपने के लिए कहा है।गुरु जम्भेश्वर के अनुसार सांसारिक जीवन एवं सांसारिक संबंध क्षणिक एवं सारहीन है। संसार में रहने वाले मनुष्य की आयु क्षण क्षण घटती जा रही है। मानव जीवन में उसे सदैव जागरूक एवं परिश्रमी रहना चाहिए। जिससे उसका मानव जीवन सफल हो सके।गुरु जम्भेश्वर जी के अनुसार जिसतरह फिटकरी गंदे पानी को साफ कर देती है ।उसी तरह गीता का ज्ञान भी मन के मैल को साफ कर देता हैं।

मनुष्य को यह मानकर चलना चाहिए कि यह संसार मनुष्य का वास्तविक घर नहीं है।यहाँ का निवास अस्थायी है।संसारिक निवास को गुरु जंभेश्वर जी ने गोवल वास बताया है ।मारवाड़ में अकाल पड़ने पर जब लोग अपने पशुओं को लेकर दूसरे गांव में जाकर रहते थे तो इसे गोल वास कहते हैं ।गोवा लास की अवधि अनिश्चित होती है। सुकाल होने पर लोग अपने असली घर में लौट आते हैं ।इस संसार को सारहीन समझकर सदैव अच्छे कर्म करके मानव जीवन को सार्थक बनाना चाहिए।

गुरु जम्बेश्वर जी ने तन मन एवं आचरण की पवित्रता पर बल दिया है। इसी कारण उन्होंने सभी प्रकार के दान से स्नान को अधिक महत्त्व दिया।मनुष्य अपने शरीर से ही भौतिक सुख प्राप्त करता है ।और शरीर के द्वारा ही मोक्ष प्राप्ति का प्रयास करता है ।इसलिए शरीर को स्नान द्वारा स्वच्छ रखना आवश्यक है।संयम रखना और उत्तम कर्म करना,मन और आचरण की पवित्रता है। तन मन एवं आचरण से पवित्र रहने वाला व्यक्ति ही संसार मैं प्रसन्नचित रह सकता है।

गुरु जम्बेश्वर जी ने अनुभव किया कि लोगों को पर्यावरण के महत्त्व को समझना ही होगा स्वयं के अस्तित्व के लिये जीवनशैली को प्रकृति के अनुसार ढालने हेतु आपने उत्प्रेरित किया। इससे प्रतीत होता है कि वे सुलझे हुए पर्यावरणीय वैज्ञानिक भी थे।विश्नोई धर्म में 29 नियमों वाले आधार संहिता में प्रमुख है किसी भी जीवित (हरे)पेड़ को काटा ना जाये1 रूंख लीलो नाही घावे। उन्होंने पेड़ों में जीव होने की बात विश्व मैं सर्वप्रथम कही और कहा की दुसरो की हत्या कर अपना पोषण करने वाले कर्म से चांडाल है। उनके विचारों में जो गाय ,भेड़ और बकरी दिनभर जंगल में घास चरने के बाद घर आकर हमें दूध पिलाती हैं ।उन्हें मारकर खाना इससे बड़ा अपराध क्या हो सकता है। समग्रता कहा जा सकता है की विश्नोई समाज हमारी सांस्कृतिक धरोहर ,सामाजिक मूल्यों और परम्पराओं का संवाहक है ।पर्यावरण के प्रति इस समाज का योगदान व चेतना अनुकरणीय है।जो निश्चित ही श्री जम्भेश्वर जीके उपदेशों, निर्देशों व उनके दिव्य दर्शन का ही प्रभाव उनके अनुयायी बिश्नोई समाज पर है।

गुरु जम्भेश्वर जी ने अपने समय के भयंकर अकाल देखे थे ।अकाल के कारण मनुष्य को बेघर होना पड़ता था और पशुधन को भी हानि होती है ।अकाल की भयंकरता को देखकर ही गुरु जम्भेश्वर जी ने ऐसे उपाय किए थे जिससे मनुष्य को अकाल का सामना न करना पड़े ।अकाल की समाप्ति हेतु उन्होंने एक ओर वृक्षारोपण पर बल दिया था और दूसरा हरे पेड़ ना काटने का नियम बना बनाया था।

ईंधन के साथ विभिन्न जीवों के जलने से भी हिंसा होती हैऔर प्रदूषण फैलता है। इसलिए गुरु जी ने ईंधन को भी अच्छी तरह झाड़कर काम में लेने पर बल दिया है ।गुरु जम्भेश्वर जी द्वारा बताया गया यह नियम भी पर्यावरण को शुद्ध रखने में अत्यंत सहायक रहा है ।हवन के द्वारा पर्यावरण शुद्ध रहता है इस बात को आज के वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं इससे वातावरण में व्याप्त प्रदूषण समाप्त हो जाता हैं।

मरु प्रदेश की तुलसी कही जाने वाली खेजड़ी जो आज सुरक्षित है। गुरु जम्भेश्वर जी ने खेजड़ी के महत्व को समझकर ही स्थान स्थान पर खेजड़ी के पेड़ लगाए थे। मरु प्रदेश के पर्यावरण संरक्षण में खेजड़ी का अत्यंत योगदान है।

गुरु जम्भेश्वर जी ने भौतिक जीवन के सुख के लिए एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु जितनी बातें कही वे सब व्यावहारिक ,सरल और सच्ची है ।उन्होंने सादगी ,परोपकार, अच्छी संगति, एक निष्ठाभाव ,परिश्रम ,दया,धर्म, शील,संतोष,पवित्रता, नमता , क्षमा,सत्य और इमान आदि गुणों का समर्थन किया ।वाद विवाद, दुविधा ,अहम, पाखंड, भेदभाव, झूठ एवं क्रोध आदि का विरोध किया है ।उन्होंने जो कुछ कहा है वह मानव मात्र के लिए किसी वर्ग या जाति विशेष के लिए नहीं है। इसके साथ ही उन्होंने जो कुछ कहा वह संपूर्ण जीवन को दृष्टिगत रखकर कहा है ।इसलिए उनकी शिक्षा पूर्ण एवं व्यवहारिक होने के साथ साथ सभी कालों में समान रूप से प्रभावशाली रहने वाली हैं।

गुरु जम्भेश्वर जी के दर्शन का समकालीन विश्व परिदृश्य में उपादेयता -

गुरु जम्भेश्वर जी का चिन्तन एवं उनके वर्तमान समय में उपयोगिता एक समसामयिक विषय है।

आज उपभोक्तावादी संस्कृति ने मानव जीवन को तनाव ,असंतोष और नैतिक पतन की ओर धकेल दिया है ।गुरु जम्भेश्वर जी का संयम ,सादगी और आत्म नियंत्रण का दर्शन इस संकट का समाधान प्रस्तुत करता है।

समकालीन विश्व युद्ध, आतंकवाद और हिंसा से पीड़ित हैं। गुरूजी का हिंसा और सह अस्तित्व का संदेश विश्व शांति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आधुनिक विश्व मानव अधिकारों की बात करता है किंतु व्यवहार में भेदभाव बना हुआ गुरु जम्भेश्वर जी ने व्यावहारिक समानता को पहले अपनाया।

पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में उनके बताए गए उपाय आज भी मूल्यवान है।

समकालीन शिक्षा और है निति निर्माण में उनके उपदेशों की प्रासंगिकता बनी हुई है।नशामुक्ति और संशय से दूरी बनाकर आज का युवा अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।

निष्कर्ष-

गुरु जम्भेश्वर जी का जीवन और दर्शन मध्यकालीन भारत की देन होते हुए भी पूर्णता आधुनिक और भविष्य दृष्टा है। उन्होंने जिस समावयवादी दृष्टि को बताया। मानव ,प्रगति और पर्यावरण संतुलन को अपनाया वही आज के समकालीन विश्व की सबसे बड़ी आवश्यकता है।कहा जा सकता है यदि आज का मानव समाज गुरु जीके नियमों को अपने जीवन में आंशिक रूप से भी आप आत्मसात कर लें ।तो पर्यावरण संकट ,सामाजिक विघटन और नैतिक पतन जैसी समस्याओं का समाधान संभव है। इस प्रकार गुरु जी ने केवल अतीत के संत ही नहीं बल्कि वर्तमान और भविष्य के मार्गदर्शक भी है।

संदर्भ –

- कृष्णानंद आचार्य(टीकाकार)(2013), जम्भसागर, जांबनी, साहित्य अकादमी, बीकानेर संस्करण।
- विश्नोई, डॉ सुरेन्द्र, गुरू जम्भो का विश्विक चिन्तन, राजकुमार सेवक प्रकाशक ज्ञांभनी साहित्य, बीकानेर, पृ.99
- डॉ केशवराम विश्नोई, जांभवनी मूल संजीवनी व्याख्या पृ.146
- वर्तमान परिदृश्य में गुरु जम्भो जी का चिन्तन,जांबानी साहित्य प्रकाशन पृ.122
- डॉ हीरालाल महेश्वरी, जम्भो जी, विश्नोई सम्प्रदाय और साहित्य पृ.317
- विश्नोई,पृथ्वीराज(2018),गुरु श्री जम्भोजी एंड शब्दवाणी जांभाणी, साहित्य अकादमी, बीकानेर
- आचार्य,कृष्णानंद (2016)(टीकाकार), जम्भसागर, जांभाणी साहित्य अकादमी ,बीकानेर
- चंदेल,एमएस(2018), जम्भो जी :मसीहा ऑफ दी थार डेज़र्ट, औरव पब्लिकेशन, चंडीगढ़
- जैन,पंकज(2010),द विश्नोई एन इको थियोलॉजी न्यू रिलिजियस मूवमेंट इन इंडियन डिजर्ट,जर्नल ऑफ वैष्णो स्टडीज़
- सहू,डॉ.बनवारी.लाल(2016),विश्नोई पंथ और साहित्य ,जांभाणी साहित्य अकादमी,बीकानेर
- आचार्य,कृष्णानंद(2014)(संपादक), सब्दवाणी, जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर